==============================================================================

AVYAKT MURLI

18 / 01 / 77

==============================================================================

18-01-77 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

## 18 जनवरी का विशेष महत्व

अटल, अचल, अखंड, सदा हर परिस्थिति में भी अड़ोल, सर्व गुण और सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाने वाले बाबा बोले:-

सभी स्मृति-स्वरूप अर्थात् समर्थी-स्वरूप स्थिति में स्थित हो?  ज का दिन विशेष रूप में स्मृति-स्वरूप बनने का है। बाप-दादा के स्नेह में समाए हुए अर्थात् बाप समान बनने वाले स्नेह की निशानी है - समानता। तो  ज सारा दिन स्मृति-स्वरूप अर्थात् बाप समान स्वयं को अनुभव किया? बाप-दादा के स्नेह का रेसपान्स (RESPONSE) ‘बाप समान भव’ का वरदान अनुभव किया?  ज का विशेष दिवस स्वत: और सहज और थोड़े समय में बाप समान स्थिति अनुभव करने का दिन है। जैसे सभी युगों में से संगमयुग सहज प्राप्ति का युग गाया जाता है, वैसे ब्राह्मण के लिए संगमयुग में भी यह दिन विशेष सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त होने का, ‘बाप समान’ की स्थिति का अनुभव करने का ड्रामा में नूंधा हु  है। विशेष

दिन का विशेष महत्व जान, महान रूप से मनाया? अमृतवेले से बाप-दादा ने विशेष अनुभवों के गोल्डन चान्स (Golden Chance) की लाटरी (Lottery) खोली है। ऐसी लाटरी लेने के अधिकार को अनुभव किया? स्नेह-युक्त रह व योग-युक्त, सर्वशक्तयों के प्रति युक्त, सर्व प्रकार के प्रकृति व माया के □ कर्षण से परे रहे? □ ज बाप-दादा ने बच्चों के पुरूषार्थ की रिज़ल्ट देखीं। रिज़ल्ट में क्या देखा, जानते हो?

बहुत बच्चे बाप-दादा के सिर के ताज के रूप में देखे। और कई बच्चे गले के हार के रूप में देखे; और कई बच्चे भुजाओं के श्रृंगार के रूप में देखे। अब हर एक अपने से पूछे कि ''मेरा स्थान कहाँ है?'' (जहाँ बाबा बिठायेंगे) बाबा बिठाये, लेकिन बैठना तो □ पको पड़ेगा ना! बाप की □ ज्ञा बहुत बड़ी है। उसको जानते हो ना? विदेशी सो स्वदेशी किस में होंगे? सब विदेशी ताज में □ येंगे तो स्वदेशी कहाँ जायेंगे? ताज में तो बहुत थोड़े होते हैं। मेजारिटी (Majority) गले और भुजाओं का श्रृंगार हैं। ताजधारी अर्थात् बाप के ताज में चमकते हुए रत्न, जिन की विशेष पूजा होती है उनकी निशानी है 'सदा बाप में समाए हुए और समान'। उन के हर बोल और कर्म से सदा और स्वत: बाप प्रत्यक्ष होगा। उनकी सीरत और सूरत को देख हर एक के मुख से यही बोल निकलेंगे कि कमाल है, जो बाप ने ऐसे योग्य बनाया! उनके गुण देखते हुए निरन्तर बाप-दादा के गुण सब गायेंगे। उन की दृष्टि सभी की वृत्ति को परिवर्तन करेंगी। ऐसी स्थिति वाले सिर के ताज गाए जाते हैं।

गले का श्रृंगार अर्थात् सेकेण्ड नम्बर सदैव अपने गले की □ वाज़ अर्थात् मुख के □ वाज़ द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने के प्रयत्न में रहते हैं। सदा बाप-दादा को अपने सामने रखते हैं; लेकिन समाए हुए नहीं रहते। सदा बाप-दादा के गुण गाते रहते लेकिन स्वयं सदा गुण मूर्त नहीं रहते। समान बनने की भावना और श्रेष्ठ कामना रखते हैं लेकिन हर प्रकार की माया के वारों का सामना नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति वाले गले का श्रृंगार हैं।

तीसरी क्वालिटी (Quality-प्रकार) तो सहज ही समझ गए होंगे, भुजा की निशानी है सहयोग की, जो किसी भी प्रकार से, मन से, वाणी से □ थवा कर्म से, तनमन वा धन से बाप के कर्त्तव्य में सहयोगी होते हैं, लेकिन सदा योगी नहीं होते - ऐसे भी अनेक बच्चे हैं। बाप-दादा ने रिवाईज़ कोर्स (REVISE Course) के साथ रियलाईजेशन कोर्स (REALIZATION Course) भी दिया है। अब बाकी क्या रहा? क्या कमी रह गई है बाकी?

नष्टोमोह: स्मृति-स्वरूप हो गए कि अभी होना है? 1976 तक होना ही था ना? फाईनल विनाश तक रूकी हुई है क्या? इन्तजार तो नहीं कर रहे हो ना? विनाश का इन्तजार करना अर्थात् अपनी डैथ (Death;मृत्यु) की डेट की स्मृति रखना, अपनी डैथ का □ ह्वान कर रहे हो? कितने संकल्प कर रहे हो, विनाश क्यों नहीं हु□ ? कब होगा? कैसे होगा? संगमयुग सुहावना लगता है वा सतयुग? तो घबराते क्यों हो कि विनाश क्यों नहीं हु□ ? अगर स्वयं इस प्रश्न से प्रसन्न हैं तो दूसरे को भी प्रसन्न कर सकते हैं। स्वयं ही क्वेश्चन में हैं तो दूसरे भी जरूर पूछेंगे। इसलिए घबराओ नहीं। कोई

पूछते हैं कि विनाश क्यों नहीं हु□ , तो और ही उसको कहो कि □ प के कारण नहीं हु□ । बाप के साथ हम सभी भी विश्व-कल्याणकारी हैं। विश्व के कल्याण में □ प जैसी और □ त्माओं का कल्याण रहा हु□ है। इसलिए अभी भी चान्स है। होता क्या है कि जब कोई क्वेश्चन करता है तो □ प लोग स्वयं ही 'क्यों''क्या' में कनफ्यूज (Confuse) हो जाते हो - हाँ ''कहा तो है, लिखा हु□ तो है, होना तो चाहिये था''। इसलिए दूसरे को संतुष्ट नहीं कर पाते हो। फलक से कहो कि कल्याणकारी बाबा के इस बोल में भी कल्याण समया हु□ है। उसको हम जानते हैं, □ प भी □ गे चलकर जानेंगे। डरो मत। 'क्या कहेंगे, कैसे कहेंगे' ऐसे सोचकर किनारा न करो। जिन लोगों को कहा है, उनसे डर के मारे किनारा न करो। क्या करेंगे? अगर उल्टा प्रोपगण्डा (Propaganda) करेंगे तो वो उल्टा बोल अनेकों को सुल्टा बना देगा। प्रत्यक्षता का साधन बन जायेगा। बच्चे भी पूछते रहते हैं, तो लोगों ने पूछा तो क्या बड़ी बात हुई! सोचते हैं ''यह करें या ना करें? प्रवृत्ति को कैसे चलायें! व्यवहार को कैसे सैट करें! बच्चों की शादी करें या नहीं करें! मकान बनायें या नहीं?'' वास्तव में इस क्वेश्चन का विनाश की डेट से कोई कनेक्शन (Connection;सम्बन्ध) नहीं है। अगर प्रॉपर्टी है और बनाने का संकल्प है तो इससे सिद्ध है कि स्वयं प्रति यूज़ (USE;प्रयोग) करने की भावना है। अगर ईश्वरीय सेवा में लगाना ही है तो मकान बनाना या वैसे ही प्रॉपर्टी रखना उसका तो क्वेश्चन ही नहीं उठता। लेकिन □ वश्यकता है और डायरेक्शन प्रमाण बनाते भी हैं, तो उसका

बनाना व्यर्थ नहीं होगा, लेकिन जमा होगा। तो विनाश के कारण घबराने की बात ही नहीं, क्योंकि श्रीमत पर चलना अर्थात् इन्श्योरेन्स (Insurance) करना। उसका उनको फल मिल ही जाता है।

बाकी रहा शादी कराने का वा करने का क्वेश्चन। इसके लिए तो पहले से ही डायरेक्शन (Direction) है जहाँ तक स्वयं को और अन्य □ त्माओं को बचा सकते हो वहाँ तब तक बचाओ। विनाश अगर 1976 में नहीं हु□ तो क्या विनाश के कारण पवित्र रहते थे क्या? पवित्रता तो ब्राह्मण जन्म का स्वधर्म है। पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का लक्ष्य और लक्षण है। जिसका निजी लक्षण ही पवित्रता है उसका विनाश की डेट के साथ कोई कनेक्शन नहीं। यह तो स्वयं की कमज़ोरी छिपाने का बहाना है। क्योंकि ब्राह्मण बहानेबाजी बहुत जानते हैं। अच्छा, बाकी रही दूसरों को शादी कराने की बात। उसके लिए जहाँ तक बचा सको बचाओ। स्वयं कमज़ोर बन उसको उत्साह नहीं दिलाओ। मन में भी यह संकल्प न करो कि अब तो करना ही पड़ेगा। दस वर्ष पहले भी जिन को बचा न सके तो उनका क्या किया! साक्षी होकर संकल्प से वाणी से, भी बचाने का प्रयत्न किया वैसे ही अभी भी इसी प्रकार दृढ़ रहो। बाकी जिनको गिरना ही है उनको क्या करेंगे! विनाश के कारण स्वयं हलचल में न □ ओ। □ पकी हलचल अज्ञानियों को भी हलचल में लायेगी। □ प अचल रहो। फलक से, निर्भयता से बोलो। फिर वो लोग □ पे ही चुप हो जायेंगे, कुछ बोल नहीं सकेंगे। □ प निश्चय बुद्धि से संकल्प रूप में भी संशय-बुद्धि न बनो। रॉयल रूप का

संशय है कि 'ऐसा होना तो चाहिए था', पता नहीं बाबा ने क्यों ऐसा कहा था। पहले से ही बाप-दादा बता देते थे। अब सामने कैसे जायेंगे? यह रॉयल रूप का संशय, दुनिया वालों को भी संशय-बुद्धि बनाने के निमित्त बनेगा। "हाँ! कहा है, अभी भी कहेंगे" - इसी निश्चय और नशे में रहो तो वो नमस्कार करने □ येंगे कि धन्य है □ पका निश्चय। समझा? घबराओ नहीं, क्या जेल में जाने से डरते हो? डरते नहीं, घबराते हैं। सामना करने की शक्ति नहीं है। यही कहो कि जो कुछ कहा था उसमें कल्याण था। अब भी है। हम अभी भी कहते हैं। उनको अगर ईश्वरीय नशे और रमणीकता से सुनाओ तो वो और ही हंसेंगे। लेकिन पहले स्वयं मजबूत हो। समझा?

□ ज सबके संकल्प पहुँचे, सबको इन्तजार था 18 तारीख को क्या सुनायेंगे। अब सुना? बाप-दादा साथ हैं; कोई कुछ कर नहीं सकता; कह नहीं सकता, जलती हुई भट्टी में भी पूंगरे सलामत रहे, यह तो कुछ भी नहीं है। बाल भी बांका नहीं कर सकता। साधारण साथ नहीं, सर्वशक्तिवान का साथ है। इसलिए 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'।

डेट बताने की जरूरत ही नहीं। कभी भी फाइनल (Final) विनाश की डेट फिक्स (Fix) नहीं हो सकती। अगर डेट फिक्स हो जाए तो सब सीट्स (Seats) भी फिक्स हो जाएं, फिर तो पास विद् ऑनर्स (Pass With Honours) की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो डेट □ ही जायेगी। जब सभी इस संकल्प से निरसंकल्प होंगे वही डेट विनाश की होगी। अच्छा।

ऐसे अचल, अटल, अखण्ड, सदा हर परिस्थिति में भी श्रेष्ठ स्थिति में अड़ोल, सर्व गुणों और सर्व शक्तियों के स्तम्भ स्वरूप  त्माओं को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।

==============================================================================

QUIZ QUESTIONS

==============================================================================

प्रश्न 1 :-  ज बापदादा ने कौन से विशेष अनुभवों के गोल्डन चान्स की लाटरी खोली है?

प्रश्न 2 :- ताजधारी अर्थात् बाप के ताज में चमकते हुए रत्नों की निशानी क्या है ?

प्रश्न 3 :- जो बच्चे बापदादा के गले का श्रृंगार है,उनकी स्थिति कैसी होती है?

प्रश्न 4 :- कोई पूछते हैं कि विनाश क्यों नहीं हु , तो बापदादा ने उनसे क्या कहने की समझानी दी है?

प्रश्न 5 :- बापदादा ने अचल रहने और निश्चयबुद्धि बनने के विषय में क्या समझानी दी है?

FILL IN THE BLANKS:-

{ अड़ोल, समर्थी, हार, सम्पन्न, स्थान, श्रृंगार, लक्ष्य, योगी, लक्षण, सहयोग, सीट्स, कर्त्तव्य, निश्चिन्त, डेट, कनेक्शन }

1 अटल, अचल, अखंड, सदा हर परिस्थिति में भी _____, सर्व गुण और सर्व शक्तियों से _____ बनाने वाले बाबा पूछ रहे हैं कि सभी स्मृति-स्वरूप अर्थात् _____-स्वरूप स्थिति में स्थित हैं।

2 बहुत बच्चे बाप-दादा के सिर के ताज के रूप में देखे। और कई बच्चे गले के ____ के रूप में देखे; और कई बच्चे भुजाओं के _____ के रूप में देखे। अब हर एक अपने से पूछे कि ''मेरा _____ कहाँ है।''

3 भुजा की निशानी है _____ की, जो किसी भी प्रकार से, मन से, वाणी से □ थवा कर्म से, तनमन वा धन से बाप के _____ में सहयोगी होते हैं, लेकिन सदा _____ नहीं होते ।

4 पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का ____ और लक्षण है। जिसका निजी _____ ही पवित्रता है उसका विनाश की डेट के साथ कोई ______ नहीं।

5 अगर विनाश की डेट फिक्स हो जाए तो सब _____ भी फिक्स हो जाएं, फिर तो पास विद् ऑनर्स की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से ______ रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो ____□ ही जायेगी।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- मनुष्य के लिए संगमयुग में भी यह दिन विशेष सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त होने का, 'बाप समान' की स्थिति का अनुभव करने का ड्रामा में नूंधा हु  है।

2 :- विनाश का इन्तजार करना अर्थात् अपनी डैथ (Death;मृत्यु) की डेट की स्मृति रखना।

3 :- विनाश के कारण घबराने की बात ही नहीं, क्योंकि मनमत पर चलना अर्थात् इन्श्योरेन्स (Insurance) करना।

4 :- यही कहो कि जो कुछ कहा था उसमें कल्याण था। अब भी है। ईश्वरीय नशे और रमणीकता से सुनाओ लेकिन पहले स्वयं मजबूत हो।

5 :- साधारण साथ नहीं, सर्वशक्तिवान का साथ है। इसलिए 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'।

==========================================================================

QUIZ ANSWERS

==========================================================================

प्रश्न 1 :-  ज बापदादा ने कौन से विशेष अनुभवों के गोल्डन चान्स की लाटरी  खोली है?

उत्तर 1 :- अमृतवेले से बाप-दादा ने विशेष अनुभवों के गोल्डन चान्स की लाटरी खोली है। ऐसी लाटरी लेने के अधिकार को अनुभव करना है।

❶ ज का दिन विशेष रूप में स्मृति-स्वरूप बनने का है।

❷ बाप-दादा के स्नेह में समाए हुए अर्थात् बाप समान बनने वाले स्नेह की निशानी है - समानता।

❸ बाप-दादा के स्नेह का रेसपान्स ‘बाप समान भव’ का वरदान अनुभव करना है।

❹ ज का विशेष दिवस स्वत: और सहज और थोड़े समय में बाप समान स्थिति अनुभव करने का दिन है।

❺ स्नेह-युक्त रह व योग-युक्त, सर्वशक्तयों के प्रति युक्त, सर्व प्रकार के प्रकृति व माया के  कर्षण से परे रहना है।

प्रश्न 2 :- ताजधारी अर्थात् बाप के ताज में चमकते हुए रत्नों की निशानी क्या है ?

उत्तर 2 :- बापदादा समझा रहे हैं-

❶ ताजधारी अर्थात् बाप के ताज में चमकते हुए रत्न, जिन की विशेष पूजा होती है उनकी निशानी है ‘सदा बाप में समाए हुए और समान’।

❷ उन के हर बोल और कर्म से सदा और स्वत: बाप प्रत्यक्ष होगा।

❸ उनकी सीरत और सूरत को देख हर एक के मुख से यही बोल निकलेंगे कि कमाल है, जो बाप ने ऐसे योग्य बनाया।

❹ उनके गुण देखते हुए निरन्तर बाप-दादा के गुण सब गायेंगे।

❺ उन की दृष्टि सभी की वृत्ति को परिवर्तन करेंगी। ऐसी स्थिति वाले सिर के ताज गाए जाते हैं।

**प्रश्न 3 :- जो बच्चे बापदादा के गले का श्रृंगार है,उनकी स्थिति कैसी होती है?**

उत्तर 3 :- बापदादा समझा रहे हैं कि गले का श्रृंगार अर्थात् सेकेण्ड नम्बर-

❶ सदैव अपने गले की □ वाज़ अर्थात् मुख के □ वाज़ द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने के प्रयत्न में रहते हैं।

❷ सदा बाप-दादा को अपने सामने रखते हैं; लेकिन समाए हुए नहीं रहते।

❸ सदा बाप-दादा के गुण गाते रहते लेकिन स्वयं सदा गुण मूर्त नहीं रहते।

❹ समान बनने की भावना और श्रेष्ठ कामना रखते हैं लेकिन हर प्रकार की माया के वारों का सामना नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति वाले गले का श्रृंगार हैं।

प्रश्न 4 :- कोई पूछते हैं कि विनाश क्यों नहीं हु , तो बापदादा ने उनसे क्या कहने की समझानी दी है?

उत्तर 4 :- कोई पूछते हैं कि विनाश क्यों नहीं हु -

❶ उसको कहो कि  प के कारण नहीं हु । बाप के साथ हम सभी भी विश्व-कल्याणकारी हैं। विश्व के कल्याण में  प जैसी और  त्माओं का कल्याण रहा हु  है। इसलिए अभी भी चान्स है।

❷ फलक से कहो कि कल्याणकारी बाबा के इस बोल में भी कल्याण समाया हु  है। उसको हम जानते हैं,  प भी  गे चलकर जानेंगे।

प्रश्न 5 :- बापदादा ने 'अचल रहो' और 'निश्चयबुद्धि बनने' के विषय में क्या समझानी दी है?

उत्तर 5 :- बापदादा ने समझानी दी है-

❶ विनाश के कारण स्वयं हलचल में न  ओ।  पकी हलचल अज्ञानियों को भी हलचल में लायेगी।  प अचल रहो।

❷ फलक से, निर्भयता से बोलो। फिर वो लोग  पे ही चुप हो जायेंगे, कुछ बोल नहीं सकेंगे।

❸  प निश्चय बुद्धि से संकल्प रूप में भी संशय-बुद्धि न बनो। रॉयल रूप का संशय है कि 'ऐसा होना तो चाहिए था', पता नहीं बाबा ने क्यों ऐसा कहा था। पहले से ही बाप-दादा बता देते थे। यह रॉयल रूप का संशय, दुनिया वालों को भी संशय-बुद्धि बनाने के निमित्त बनेगा।

❹ "हाँ! कहा है, अभी भी कहेंगे" - इसी निश्चय और नशे में रहो तो वो नमस्कार करने  येंगे कि धन्य है  पका निश्चय।

FILL IN THE BLANKS:-

{ अड़ोल, समर्थी, हार, सम्पन्न, स्थान, श्रृंगार, लक्ष्य, योगी, लक्षण, सहयोग, सीट्स, कर्त्तव्य, निश्चिन्त, डेट, कनेक्शन }

1 अटल, अचल, अखंड, सदा हर परिस्थिति में भी ______, सर्व गुण और सर्व शक्तियों से ______ बनाने वाले बाबा पूछ रहे हैं कि सभी स्मृति-स्वरूप अर्थात् ______-स्वरूप स्थिति में स्थित हैं।

अड़ोल./ सम्पन्न / समर्थी

2 बहुत बच्चे बाप-दादा के सिर के ताज के रूप में देखे। और कई बच्चे गले के ____ के रूप में देखे; और कई बच्चे भुजाओं के _____ के रूप में देखे। अब हर एक अपने से पूछे कि "मेरा _____ कहाँ है।"

हार / श्रृंगार / स्थान

3 भुजा की निशानी है _____ की, जो किसी भी प्रकार से, मन से, वाणी से  थवा कर्म से, तनमन वा धन से बाप के _____ में सहयोगी होते हैं, लेकिन सदा _____ नहीं होते ।

सहयोग / कर्त्तव्य / योगी

4 पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का ____ और लक्षण है। जिसका निजी _____ ही पवित्रता है उसका विनाश की डेट के साथ कोई ______ नहीं।

लक्ष्य / लक्षण / कनेक्शन

5 अगर विनाश की डेट फिक्स हो जाए तो सब _____ भी फिक्स हो जाएं, फिर तो पास विद् ऑनर्स की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से ______ रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो ____ ी ही जायेगी।

सीट्स / निश्चिन्त / डेट

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✔】 【✖】

1 :- मनुष्य के लिए संगमयुग में भी यह दिन विशेष सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त होने का, 'बाप समान' की स्थिति का अनुभव करने का ड्रामा में नूंधा हु ै। 【✖】

ब्राह्मण के लिए संगमयुग में भी यह दिन विशेष सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त होने का, 'बाप समान' की स्थिति का अनुभव करने का ड्रामा में नूंधा हु ै।

2 :- विनाश का इन्तजार करना अर्थात् अपनी डैथ (Death;मृत्यु) की डेट की स्मृति रखना। 【✔】

3 :- विनाश के कारण घबराने की बात ही नहीं, क्योंकि मनमत पर चलना अर्थात् इन्श्योरेन्स (Insurance) करना। 【✖】

विनाश के कारण घबराने की बात ही नहीं, क्योंकि श्रीमत पर चलना अर्थात् इन्श्योरेन्स (Insurance) करना।

4 :- यही कहो कि जो कुछ कहा था उसमें कल्याण था। अब भी है। ईश्वरीय नशे और रमणीकता से सुनाओ लेकिन पहले स्वयं मजबूत हो। 【✔】

5 :- साधारण साथ नहीं, सर्वशक्तिवान का साथ है। इसलिए ‘निश्चयबुद्धि विजयन्ति’। 【✔】